धानी धरती

डॉ. अन्नपूर्णा भदौरिया
डी. लिट्

प्रकाशक :
शानू पब्लिकेशन, ग्वालियर

Scanned with OKEN Scanner

धानी धरती

(साक्षरता गीत संग्रह)

डॉ. अन्नपूर्णा भदौरिया

प्रथम संस्करण
(मार्च १९९४)

© लेखिकाधीन

मूल्य ५/- रु. मात्र

प्रकाशक :
शानू पब्लिकेशन
कमाठीपुरा, माधवगंज,
ग्वालियर (म.प्र.)

मुद्रक :-
शानू पब्लिकेशन एण्ड प्रिंटर्स,
कमाठीपुरा, माधवगंज,
ग्वालियर (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

लांगुरिया

लैकै अच्छर भरी किताब,
छमाछम नाचै लांगुरिया।
नाचै लांगुरिया, पढ़न कौं जावै लांगुरिया
लैकैं अच्छर भरी......

गांव–गांव में खुलौ है भइया,
साच्छरता कौ केन्द्र
ज्ञान की सिच्छा ले कै,
करलेउ जीवन को कल्यान।
लैकैं अच्छर भरी

कोऊ आबै बीस साल कौ,
और कोऊ चालीस।
कहुॅं–कहुॅं आवै लरिका बिटिया
कहुॅं बहुअन की सास।
लैकैं अच्छर भरी

पढ़ि लेउ पढ़ि लेउ धूम मची,
जामैं लगै न कोऊ फीस।
फिर मत कहियो पढ़ नई पाए,
उमर जाएगी बीत।
लैकैं अच्छर भरी किताब,

छमाछम नाचै लांगुरिया।
नाचै लांगुरिया पढ़न कौ जावै लांगुरिया
लैकैं अच्छर भरी........

गीत

पढाई मेरे मन बसी कोऊ मो कौंऊ पढाइ दीजो रे।
सखीरी तेरे पाइ परू नैंक लिखिबो सिखाइ दीजो रे।।
लै कैं किताब पढन हम बैठीं,
ससुर जू आइ गए बहू रोटी बनाइ लीजो रे।
सास बोलीं चार जने कौ ब्यारू कराइ दीजो रे।
छोड किताब घुसी चौका में,
बाहर तैं आए जेठ जू बोले ओढना धोइ दी जो रे।
जिठानी कहैं सौर में नैंक डोरा डार दी जो रे।।
काम करत मेरौ बीत गयौ दिन,
संजा कौ आयौ देवरा कैसी बातैं बनाइ रहौ रे।
मोसैं कहैं कछू काम न धन्धौ।।
भाभी कौ अम्मां काम करन को,

लच्छन सिखाइ दीजो रे।
दिन भर काम करत थकि जाओं,
सास–ननद की गारी खाऔं।
पढाई मैं कब करौं कोऊ इत्तौ बताइ दीजो रे।
जाई सोच में बीत रहे दिन
साच्छरता की दो जनी,
मोइ पढिबौ सिखाइ गईं रे
पढाई के संग ने मेरी काया पलट दई रे।
अच्छर के ज्ञान सैं सब बिगडी बनाइ लीजो रे।।
पढाई मेरे मन बसी कोऊ मो कौंऊ पढाइ दीजो रे।

Scanned with OKEN Scanner